ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-8* October- 2020
Innovation The Research Concept

जनपद बागेश्वर में भूमि उपयोग की गतिशीलता एवं ग्रामीण रूपान्तरण

Land Use Dynamics and Rural Transformation in Bageshwar District

Paper Submission: 15/10/2020, Date of Acceptance: 26/10/2020, Date of Publication: 27/10/2020

भरत कुमार
शोधकर्ता,
भूगोल विभाग,
डी0एस0बी0 परिसर
कुमाऊँ विश्वविद्यालय,
नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

सर्वप्रथम क्षेत्र में भूमि उपयोग की गतिशीलता एवं ग्रामीण रूपान्तरण को समझना आवश्यक हैं। ग्रामीण रूपान्तरण के कारकों एवं प्रभावों के द्वारा हुए परिवर्तन से उनके आकार में घटने या बढ़ने से जो परिवर्तन आया उसे रूपान्तरण कहा जा सकता हैं जैसे–कृषि क्षेत्र, आवास निर्माण, सड़क निर्माण, वन क्षेत्र, खनिजों की उपलब्धता, प्राकृतिक संसाधनों आदि प्राकृतिक कारक एवं मानवीय प्रयास से क्षेत्र में रूपान्तरण किया जाता हैं। भूमि उपयोग के अन्तर्गत किये गये परिवर्तनों को भूमि परिवर्तन कहते हैं। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। धरातल आकृति बदलती रहती है, जिसे साधारण शब्दों में रूपान्तरण कहते है''।

It is necessary to first understand the dynamics of land use and rural transformation in the area. The change that has occurred due to the decrease or increase in their size due to change due to factors and effects of rural transformation, can be called transformation, such as agricultural factors, housing construction, road construction, forest area, availability of minerals, natural resources etc. And through human effort, the area is transformed. Changes made under land use are called land conversion. Change is the law of life. The surface shape keeps changing, which in simple words is called "conversion".

मुख्य शब्द : भूमि उपयोग, वनस्पति, पहाड़, पठार, घाटी, चारागाह, मैंदान, कृषि भूमि।

Land Use, Vegetation, Mountains, Plateaus, Basins, Pastures, Fields, Agricultural Land.

प्रस्तावना

भौगोलिक दृष्टिकोण से अध्ययन का महत्वपूर्ण भाग है, जो मानव के आर्थिक विकास सामाजिक विकास या सांस्कृतिक विकास करती है। अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग एवं ग्रामीण रूपान्तरण एक वृहद एवं व्यापक कर देती है, जिसके अन्तर्गत वन, वनस्पति, पहाड़, पठार, घाटी, चारागाह, मैंदान, कृषि भूमि, समुद्र, नदियां आदि प्राकृतिक परिदृश्यों आदि भूमि में सम्मिलित की जाती है। रूपान्तरण प्रकृति का सर्वव्यापी नियम हैं। चाहे व भौतिक जगत् में हो या अभौतिक जगत् में यह सदा समय के साथ परिवर्तन होता रहता हैं। रूपान्तरण किसी भी क्षेत्र में निवास करने वाले मानव समुदाय व सामाजिक स्वरूप में परिवर्तन की विभिन्न श्रेणियों को सामाजिक रूपान्तरण कहा जाता हैं।

यहीं कारण हैं कि ग्रामीण रूपान्तरण प्राचीन काल से परम्परावादी दृष्टिकोण से सामाजिक संरचना या आकार में परिवर्तन ग्रामीण रूपान्तरण ग्रामीणों के जीवन में बदलाव की प्रक्रिया जो निरन्तर चली आ रहीं हैं। ग्रामीणों के द्वारा नवीन सामाजिक व्यवहारों एवं मूल्यों को ग्रहण कर रहा हैं। वहीं दुसरी ओर उसे ग्रामीण परम्पराओ रिती–रिवाजों को छोड़ नहीं सकता हैं। ग्रामीण अनेक परिस्थितियों के कारण आधुनिक व परम्परा के मध्य समस्यातम विवाद की स्थिति बनी हुई हैं। रोजर्स ने ग्रामीण रूपान्तरण को तीन भागों में विभाजित किया गया हैं। (1) अविष्कार, (2) प्रसार, (3) प्रभाव आदि के द्वारा ग्रामीण रूपान्तरण के महत्त्वपूर्ण घटक माने जाते हैं। जिससे ग्रामीणों के क्षेत्रों में उसके आकार क्षेत्रफल विकास एवं प्रभाव के द्वारा रूपान्तरण निर्धारित किया जाता हैं।

परिकल्पना

1. कृषि क्षेत्र का विस्तार एवं मानव आवासों ने वन क्षेत्रों को प्रभावित किया हैं।
2. सड़क मार्गों के निर्माण से वन एवं कृषि क्षेत्र में कमी आ रही है।
3. खड़िया खनन् से कृषि भूमि में कमी एवं बंजर भूमि बढ़ रही है।
4. वर्तमान में कृषि क्षेत्र में एकाएक कमी से भूमि उपयोग परिदृश्य में अन्तर हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भूमि उपयोग का बदलता प्रतिरूप एवं वैज्ञानिक मूल्यांकन।
2. भूमि उपयोग एवं भूमि उपयोग परिवर्तन का व्यवसाय का अध्ययन।
3. भूमि उपयोग परिवर्तन एवं मानव अधिवास का अध्ययन।
4. भूमि उपयोग परिवर्तन एवं यातायात का अध्ययन।

साहित्य का पूर्वावलोकन

विश्व में प्राचीन काल से चली आ रही भूमि उपयोग शोध कार्यक्रम अनेक भूगोलवेत्ताओं का सफल प्रयास माना जाता है। बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए भोजन की व्यवस्था तथा कृषि को विकसित करने के लिए खोज की जाती है जो कि पीढ़ी–दर–पीढ़ी चली आ रही है। भूमि उपयोग धरातल की अपनी विशेषता होती है, जिसमें मानव सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक क्रियाओं द्वारा भू–दृश्यों का विकास करता है, जिसमें मानव संसाधनों के प्रयोग से कृषि कार्य या अन्य व्यवसाय प्रारम्भ करता है। इस क्षेत्र में राष्ट्रीय या अन्तराष्ट्रीय स्तर में भूमि उपयोग का विकास करने के लिए एवं कृषि विकास ग्रामीणों सामाजिक, आर्थिक पहलुओं का वैज्ञानिक विधि से करने के लिए अनेक भूगोलवेत्ताओं द्वारा प्रयास किया गया हैं कृषि क्षेत्र में विभिन्न भूगोलवेत्ताओं के द्वारा महत्वपूर्ण योगदान दिया है जिनका विवरण निम्नलिखित है–

यादव प्रहलाद सिंह 2013

देवकली विकास खण्ड गाजीपुर में भूमि उपयोग का सूक्ष्म अध्ययन कर आवासों की सामान्य विशेषताओं का वर्गीकरण एवं वितरण प्रणाली का वर्णन किया गया हैं। देवली विकास खण्ड़ के मैदानी भू–भागों व दक्षिणी सीमा गंगा नदी प्रवाह और जलोढ़ मृदा आदि का भौगोलिक अध्ययन किया गया हैं।

कुमार विनोद 2013

अकबरपुर विकास खण्ड़ (जनपद अम्बेड़कर नगर) के परिवर्तित भूमि उपयोग का भौगोलिक अध्ययन कर क्षेत्रीय भूमि उपयोग विकास की गतिविधियां का वर्णनात्मक अध्ययन कर क्षेत्रीय भूमि उपयोग की समस्याओं का समाधान निकाला गया हैं। और सतत् विकास पर जोर देते हुए निरन्तर उपयोग में लाये जाने का प्रस्तुत विवरण का वर्णन कर स्पष्ट किया गया हैं।

सिंह विचित्र वीर 2000

बॉदा जनपद के ग्रामीण अधिवासों का भौगोलिक अध्ययन के द्वारा ग्रामीण अधिवासों की उत्पति एवं वर्तमान अधिवासों का प्रतिरूप के साथ तुलना करते हुए आदि समस्याओं का एतिहासिक अध्ययन किया गया हैं।

मिश्र दिनेश, 2003

ग्रामीण रूपान्तरण में ग्रामीण अभिजनों की भमिका एवं चंन्दौली जनपद के थानपुर विकास खण्ड़ के सामाज शास्त्री अध्ययन कर ग्रामीण रूपान्तरण के सामाजिक कारकों में विशेष शक्तियों, औद्योगिकरण, नगरीकरण, कृषि यंत्रीकरण, नवीन योजनाओं आर्थिक सामाजिक राजनीतिक पक्षों का अध्ययन किया गया हैं।

हरेराम 2006 के अनुसार

चुनार तहसील में परिवर्तित भूमि उपयोग प्रतिरूप का भौगोलिक अध्ययन वन एवं कृषि क्षेत्र के अन्तर्गत प्रयुक्त भूमि एवं उप भूमि का विभाजन कर भूमि उपयोग परिवर्तन का विश्लेष किया गया हैं।

यादव केदार नाथ 2006

हमीदपुर जनपद का भौगोलिक अध्ययन (जनसंख्या वृद्धि एवं कृषि उत्पादकता नियोजन) का क्षेत्रीय जनसंख्या के बढ़ती आवादी के लिए कृषि उत्पादकता का सामंजस्य स्थापित करने की कोशिस की गयी हैं। जिसका उन्होंने सविस्तार पूर्वक उल्लेख किया गया हैं।

विधि तंत्रात्मक आधार

अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग की विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण प्रदान करने के उपायों का सुझाना, भविष्य में भी ऐसे संसाधनों का प्रयोग किया जा सके।

1. द्वितीय आंकड़े–द्वितीयक आंकड़े वे आंकड़े होते हैं। जो विभागो, सांख्यिकी विभाग एवं कृषि विभाग तहसील एवं लेखपाल और समाचार–पत्रों, टेलिविजन एवं अन्य प्रकाशित–अप्रकाशित पुस्तकों आदि अन्य सामग्रियों के द्वारा प्राप्त किये गया हैं।
2. शोध सामग्री–शोध सामग्री के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के संसाधनों का प्रयोग, भू–आकृतिक मानचित्र, शासकीय–अशासकीय मानचित्रों एवं टोपोशीट आदि के द्वारा कम्प्यूटर की सहायता से क्षेत्र का अध्ययन किया गया हैं।

स्थिति एवं विस्तार

क्षेत्र में कुमाऊँ हिमालय स्थिति जनपद बागेश्वर अवस्थिति है। बागेश्वरर उत्तराखण्ड के पूर्वी भाग में 29^0 42′ 4′′ उत्तरी अक्षांश 30^0 18′ 56′′ उत्तरी अक्षांशों तथा 19^0 28′ 17′′ पूर्वी देशान्तर से 80^0 9′ 4′′ पूर्वी देशान्तरों के मध्य 2246 वर्ग किमी0 क्षेत्रफल में स्थिति है। इसके उत्तर–पूर्व में चमोली–पिथौरागढ़, पूर्व में पिथौरागढ़, पश्चिम में चमोली, दक्षिण में अल्मोड़ा जनपद स्थित है। इसी प्रकार इसमें तीन विकास खण्ड हैं–बागेश्वर, कपकोट, गरूड़। जनपद में 6 तहसीलें है। बागेश्वर, काफलीगैर, काण्डा, दुगनाकुरी, गरूड़, कपकोट आदि।

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-8* October- 2020
Innovation The Research Concept

चित्र संख्या 1: जनपद बागेश्वर स्थिति एवं विस्तार :– 2011

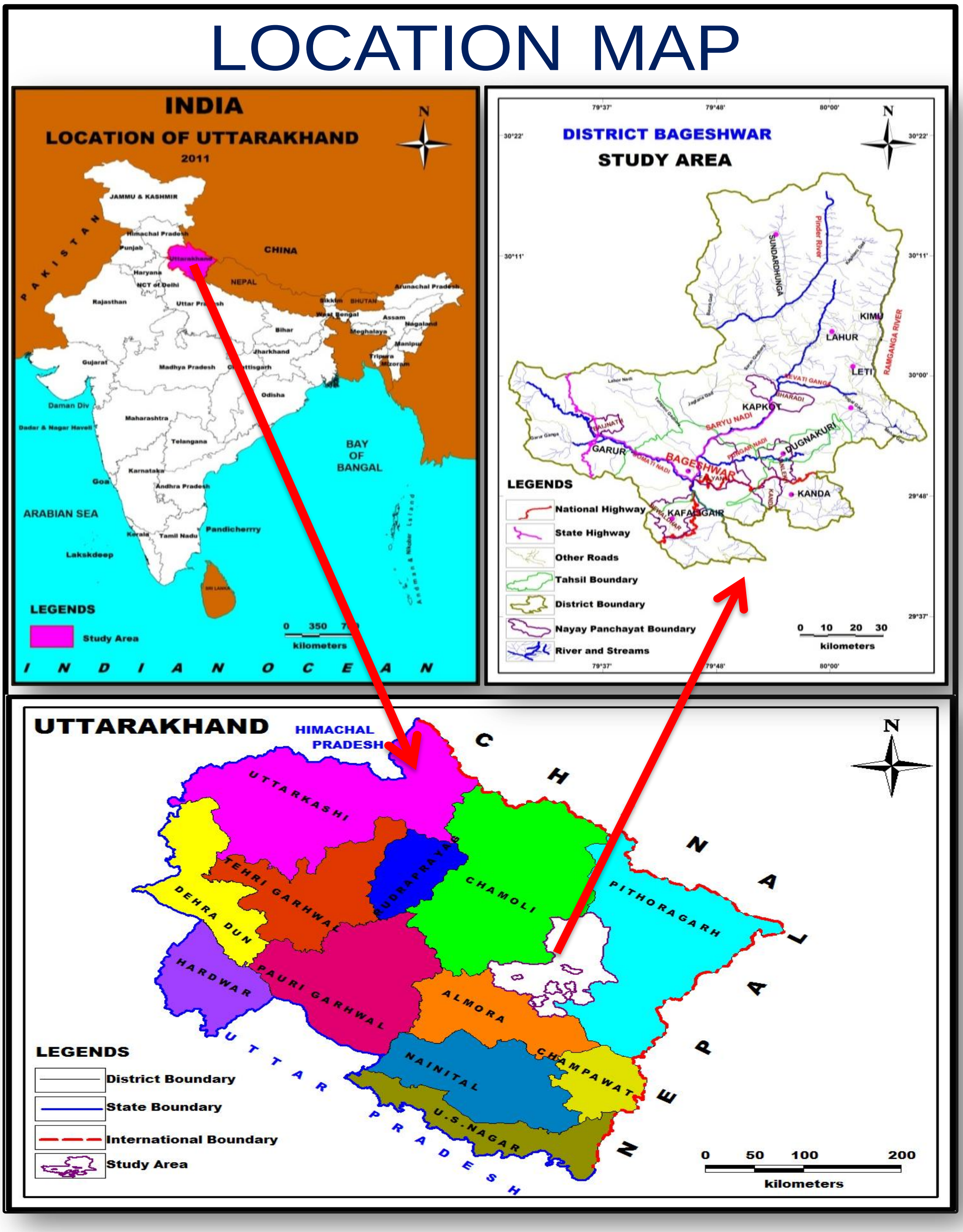

भूमि उपयोग का बदलता प्रतिरूप

वन क्षेत्र–जनपद बागेश्वर में 2009 से 2015 तक वन क्षेत्र में कोई परिवर्तन नहीं पाया गया है। बागेश्वर जनपद में वनों का क्षेत्रफल 110160 हे0 52.98 प्रतिशत भाग में वनाच्छादित है जो जनपद के आधार पर अधिक है जो पहाड़ी ढलानों एवं पर्वतों में एवं कम ढलान वाले क्षेत्रों में क्षेत्रफल इन वनों से घिरा हुआ है। इन वनों में

चीड़ का सबसे अधिक क्षेत्रफल है। इसके बाद बांज का क्षेत्रफल आता है।

कृषि योग्य बंजर भूमि

जनपद बागेश्वर में कृषि योग्य बंजर भूमि के अर्न्तगत सन् 2009 से 2015 तक पिछले सात वर्षों में 14098–10917 = 3181, (6.81–5.25= –1.56) प्रतिशत् हेक्टेयर भूमि की कमी हुई है। वर्तमान में कृषि योग्य बंजर भूमि में निरन्तर कमी आने की संभावनाएं बढ़ रही हैं। क्षेत्र में इस तरह की भूमि कई वर्षों से बंजर छोड़े गये हैं जिसमें घास, झाड़ियॉ उग आई हैं।

वर्तमान परती भूमि

वर्तमान परती भूमि जनपद में इस क्षेत्र का विस्तार 2028 हेक्टेयर भूमि में फैला हुआ है। जो 0.97 प्रतिशत् यह लगभग एक प्रतिशत् के बराबर है। सन् 2015 में 1333 (0.64 प्रतिशत्) हेक्टेयर भूमि है। जो 2015 में घटकर वर्तमान परतीय भूमि 695 (–0.33प्रतिशत्) हेक्टेयर भूमि में कमी आ जाती है।

अन्य परतीय भूमि

अन्य परतीय भूमि के अन्तर्गत जनपद में 1831 (0.88 प्रतिशत्) हेक्टेयर भूमि पाई गई है। जो 2015 में 1956 (0.94 प्रतिशत्) हेक्टेयर भूमि पाई गयी गयी है। जिसका क्षेत्रफल 2009 से 2015 तक सात वर्ष में 125 (0. 6 प्रतिशत्) हेक्टेयर भूमि में वृद्धि हुई है। जो पिछले आंकड़ों के अधार पर यह भूमि

उसर एवं कृषि अयोग्य भूमि

उसर एवं कृषि अयोग्य भूमि एक ऐसा भू–भाग है। जो कृषि अयोग्य भूमि है जिसमें कृषि नहीं की जा सकती है। इस प्रकार की भूमि का क्षेत्रफल 2009 में 6275 (3.01 प्रतिशत्) हेक्टेयर भूमि है। जो पिछले सन् 2015 की तुलना में 6502 (3.12 प्रतिशत्) हेक्टेयर भूमि में +227 (+0.01 प्रतिशत्) भूमि की बढ़ोतरी हुआ है।

कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि

क्षेत्र में इस प्रकार की भूमि का विस्तार अनेक प्रकार के वर्गों में विभाजित किया गया है। जैसे आवासीय भूमि ,खेल का मैदान, सड़क, रास्ते, ऑगन आदि सम्मिलित किया गया है। इस तरह की भूमि का विस्तार सन् 2009 में 5132 (2.46 प्रतिशत्) हेक्टेयर भूमि है। जो वर्तमान 2015 में 4725 (2.27 प्रतिशत्) हेक्टेयर भूमि बढ़कर, जो वर्तमान में –407 (–0.19 प्रतिशत्) हेक्टेयर भूमि कमी हुयी है।

चरागाह

जनपद में चारागाहों का क्षेत्रफल के आंकड़ों में वृद्धि पाया गया है। सन् 2009 में चारागाहों का क्षेत्रफल 19810 (9.52 प्रतिशत्) हेक्टेयर भूमि है। जो 2015 के आंकड़ों में बढ़ोतरी पायी गयी है। पिछले दशक में 21439 (10.31 प्रतिशत्) हेक्टेयर भूमि में बढ़ोतरी +1629 (+0.79 प्रतिशत्) हुयी है।

ता0 सं0 1: भूमि उपयोग का बदलता प्रतिरूप में अन्तर 2009–10 2014–15

क0स0	भूमि उपयोग वर्गीकरण	2009–10		2014–15		अन्तर
		हेक्टेयर	प्रतिशत्	हेक्टेयर	प्रतिशत्	प्रतिशत्
1	कुल प्रतिवेदित क्षेत्र	207902	100.00	207902	100.00	0.00
2	वन	110160	52.98	110160	52.98	0.00
3	कृषि योग्य बंजर भूमि	14096	6.81	10917	5.25	–1.56
4	वर्तमान परती	2028	0.97	1333	0.64	–0.33
5	अन्य परती	1831	0.88	1956	0.94	+0.6
6	उसर एवं कृषि अयोग्य भूमि	6275	3.01	6502	3.12	+0.01
7	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	5132	2.46	4725	2.27	–0.19
8	चारागाह	19810	9.52	21439	10.31	+0.79
9	बागों, वृक्षों एवं झाड़ियों का क्षे0	24645	11.85	28119	13.52	+1.67
10	शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल	23925	11.50	22751	10.94	–0.56

स्रोत– संख्यिकी पत्रिका बागेश्वर, 2009–2015

चित्र सं0 2 : भूमि उपयोग का बदलता प्रतिरूप में अन्तर–2011

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-8* October- 2020
Innovation The Research Concept

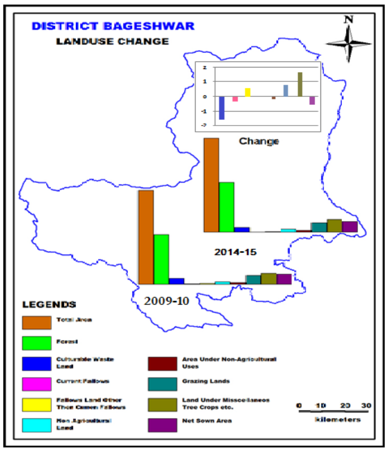

स्रोत– भारतीय सर्वेक्षण विभाग (टोपोशीट न0 53n/15, 62b/3, 53n/8, 53n/12,53n/16, 62b/4, 53o/5, 53o/9, 53o/13, 62c/1, 53o/10, 53o/14)।

बागों, वृक्षों एवं झाड़ियों का क्षेत्रफल

जनपद में बागों,वृक्षों एवं झाड़ियों के अन्तर्गत चाय बागान, आम के बागान, नासपाती के बागान, छोटे झाड़ियों आदि अन्य फलों को सम्मिलित किया गया है। इस तरह की भूमि का क्षेत्रफल सन् 2009 में 24645 (11. 85) प्रतिशत् हेक्टेयर भूमि थी। जो वर्तमान में 2015 में 28119 (13.52)प्रतिशत हेक्टेयर भूमि पिछले आंकड़ों से वर्तमान आंकड़ों में +3474 (+1.67) प्रतिशत् हेक्टेयर भूमि में वृद्धि हुयी है।

शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल

जनपद में कृषि का वितरण अलग–अलग क्षेत्रों में अलग–अलग देखने को मिलता है। यह क्षेत्र का अधिकाशं भाग असिंचित पाया गया है। सन् 2009 में 23925 (11.50) प्रतिशत् हेक्टेयर भूमि पायी गयी है। जो सन् 2015 में 22751 (10.94) प्रतिशत् हेक्टेयर रह गयी है। 2009 से 2015 तक शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल में कुल 1174 हे0 तथा 0.56 प्रतिशत् भूमि में कमी आयी है। जो वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए खाद्य आपूर्ति में कमी होने की संभावनाऐं बढ़ सकती है।

भूमि उपयोग परिवर्तन का व्यवसाय

क्षेत्र में भूमि उपयोग के द्वारा अनेक व्यवसायों की नीव ड़ाली जा सकती हैं। क्षेत्र में पंचक्की के स्थान पर डीजल चक्की का विकास तेजी के साथ पाया गया हैं। यहा 25.50 प्रतिशत् और 10.5 हेक्टेयर भू–भाग, दुकान सबसे अधिक 42.64 प्रतिशत् 18.5 हेक्टेयर भू–भाग के साथ पाया गया हैं। यह सड़कों के वितरण के फलस्वरूप विकास सम्भव हो पाया हैं। क्षेत्र में होटलों की संख्या 6.88 प्रतिशत् 3.82 हेक्टेयर भू–भाग, मैग्नेसाइट पत्थर 4.85 प्रतिशत् 7.5 हेक्टेयर भू–भाग व मत्स्य पालन 3.64 प्रतिशत् के साथ 32.5 हेक्टेयर भू–भाग पाया गया हैं। जिससे क्षेत्र में व्यवसायिक कार्यों से व्यक्तियों द्वारा अपनाये गये कार्यों का सामाजिक वितरण किया गया हैं। कृषि, पशु पालन, मुर्गीपालन यह ग्रामीणों के द्वारा व्यवसायिकरण के जगह घरेलू करण किया गया हैं। जो पुरानी परम्परागत तरिके से इनका विकास किया गया हैं।

तालिका संख्या 2: न्यायपंचायतों में व्यवसायों की संख्या–2015,16

क्र0सं0	मद	संख्या	क्षेत्रफल (एकड़)	प्रतिशत्
1	चक्की	189	10.5	25.50
2	दुकान	316	18.5	42.64
3	होटल	51	3.82	6.88
4	मत्स्य पालन	27	1.35	3.64
5	मैग्नेसाइट पत्थर	36	7.5	4.85
6	खड़िया खनन्	122	32.5	16.46
	योग	741	74.14	100.00

स्रोत्– व्यक्तिगत सर्वेक्षण के आधार पर जनपद बागेश्वर

भूमि उपयोग परिवर्तन एवं मानव अधिवास

न्यायपंचायतों में आवासों का क्षेत्रफल

जनपद बागेश्वर में अधिवासों की संख्या में प्रतिदश वर्ष में सन् 1991 में 74186 भवन 2001 में 74231 और 2011 तक 88958 भवनों में एकाएक वृद्धि दर्ज की गयी हैं। न्यायपंचायत में कुल भवनों की संख्या 11581 और क्षेत्रफल 1253.7 एकड़ पाया गया हैं। जिससे यह स्पष्ट होता हैं कि पहले ग्रामीणों के द्वारा आवासों का निर्माण प्राकृतिक स्रोतों के आस–पास आधिक मिलते थे और वर्तमान में यह इन स्रोतों से दूर होते जा रहे हैं। निम्न तालिका संख्या 8.3 के अनुसार जनपद में न्यायपंचायत स्तर पर भवनों का अध्ययन एवं उनका क्षेत्रफल निकालने की कोशिस की गयी हैं। अध्ययन क्षेत्र में 2015, 16 के अनुसार फल्याटी न्यायपंचायत में अधिक आवासों की संख्या और क्षेत्रफल हेक्टेयर अधिक पाया गया हैं। न्यूनतम अधिवास और क्षेत्रफल वनलेख न्यायपंचायत पाया गया हैं। फल्याटी न्यायपंचायत में भवनों की संख्या 3141 हैं और क्षेत्रफल 392.2 एकड़ पाया गया हैं। वैजनाथ 184.8 एकड़, भराड़ी 271.8 एकड़, देवलधार 167.5 एकड़, काण्ड़ा 128.4 एकड़, आदि वनलेख में भवनों का क्षेत्रफल 108.4 सबसे कम पाया गया हैं।

तालिका संख्या 3 : भूमि उपयोग परिवर्तन एवं मानव अधिवास 2015,16

क्र0सं0	न्यायपंचायत	आवासों की संख्या	क्षेत्रफल एकड़ में
1	फल्याटी	3141	392.6
2	वैजनाथ	1848	184.8
3	भराड़ी	2175	271.8
4	देवलधार	2147	167.5
5	काण्ड़ा	1286	128.6
6	वनलेख	984	108.4
	योग	11581	1253.7

स्रोत–व्यक्तिगत सर्वेक्षण के आधार पर जनपद बागेश्वर

भूमि उपयोग परिवर्तन एवं आय

भूमि उपयोग परिवर्तन का आय से प्रत्यक्ष सम्बन्ध हैं तालिका संख्या 8.4 के अनुसार अतिनिम्न आय सूचकांक के अन्तर्गत 6 हजार रूपये से कम मासिक आय

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-8* October- 2020
Innovation The Research Concept

और उच्च आय वाली सूचकांक 20 हजार से अधिक है। न्यायपंचायतों में आय का अध्ययन करने के लिए चार वर्गों में विभाजित किया गया हैं। उपरोक्त तालिका के आधार पर न्यायपंचायतों में अति निम्न सूचकांक 6 हजार से कम आय वाले व्यक्तियों की संख्या 85.18 प्रतिशत्, निम्न सूचकांक 6 हजार से 10 हजार रूपये के मध्य 4.31 प्रतिशत् पाया गया हैं। और मध्य वर्ग सूचकांक 10 हजार से 20 हजार के मध्य 7.33 प्रतिशत्, उच्च वर्ग के अन्तर्गत 20 हजार से अधिक आय वाले व्यक्तियों की संख्या 3.15 प्रतिशत् पाया गया हैं। अध्ययन क्षेत्र मे यह पाया गया हैं कि निम्न आय वाले व्यक्तियों की संख्या अधिक हैं और उच्च आय वाले व्यक्तियों की संख्या कम पायी गयी हैं।

ता0 सं0 4 : क्षेत्र में व्यवसाय सम्बन्धि उत्तरदाताओं की मासिक आय 2015,16

क0सं0	सूचकाक	मध्यमान आय	संख्या	प्रतिशत्
1	अति निम्न	6000 से कम	4260	85.18
2	निम्न	6000–10000	216	4.31
3	मध्यम	10000–20000	367	7.33
4	उच्च	20000सेअधिक	158	3.15
		कुल योग	5001	100.00

स्रोत–व्यक्तिगत सर्वेक्षण के आधार पर जनपद बागेश्वर

भूमि उपयोग परिवर्तन एवं यातायात

यातायात मानव विकास की रीढ़ की हड्डी मानी जाती है जो ऐसी व्यवस्था है जो एक स्थान से दूसरे स्थान को आने–जाने में सरल सुगम्य व्यवस्था मानी जाती है, जिस पर क्षेत्र की अर्थव्यवस्था टिकी होती है। मानव की आर्थिक सामाजिक राजनीतिक क्षेत्र का विकास यातायात पर निर्भर करता है। क्षेत्र में भूमि का उपयोग अनेक क्षेत्रों निरन्तर उपयोग में लाया गया है।

ता0 सं0 5 : भूमि उपयोग परिवर्तन एवं यातायात साधन–2014

क0सं0	सन्	सकड़ों की लम्बाई	गाड़िया की संख्या
1	2010	703	5168
2	2011	786	6849
3	2012	512.30	7419
4	2013	514.66	8508
5	2014	527.51	9640
6	2015	682.02	9904
7	2016	691.78	11332
8	2017	698.09	13520
	कुल योग	4417.27	72340

स्रोत–आई0 टी0 ओ0 विभाग जनपद बागेश्वर 2011

अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग परिवर्तन एवं यातायात मानव जनसंख्या के लिए दूरी कम करने के लिए यातायात एवं संसाधनों का निर्माण किया गया हैं। क्षेत्र में जितनी अधिक लम्बी एवं सड़कों का वितरण अधिक होने से संसाधनों की संख्या में उतनी ही अधिक बढ़ोतरी होगी वर्ष 2010 में 703 किमी0 लम्बी सडकों का निर्माण किया गया हैं। वर्ष 2017 में यह सड़कों की लम्बाई बढ़कर 4417.27 किमी0 हैं जो वर्तमान में भी निर्माणधीन अवस्था में पाया गया हैं। जनपद में 72340 संख्या यातायात के संसाधनों की हो गयी हैं। यह क्षेत्र में सड़कों का निर्माण एवं वितरण पर निर्भर करता हैं चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र, व्यवसाय, माल ढोना हो, आयात–निर्यात, आवागमन, रोजगार, आदि के क्षेत्र में सड़कों का निर्माण महत्त्वपूर्ण साबित हो रहा हैं। उपरोक्त तालिका संख्या 8.5 के आधार पर जनपद में 2010 के बाद प्रत्येक वर्ष सड़कों का निर्माण व लम्बाई बढ़ाई जा रही हैं। संसाधनों का निर्माण ग्रामीणों के द्वारा किया गया हैं। जिससे भूमि उपयोग सड़क निर्माण किया जा रहा हैं।

तालिका संख्या 6 : भूमि उपयोग परिवर्तन एवं यातायात साधन– 2011

क0सं0	मद गाड़ियां	संख्या	प्रतिशत्
1	मोटर साईकिल	3544	51.74
2	कार	1356	19.79
3	मैक्स	936	13.66
4	मोटरकेप टैक्सी	465	6.78
5	लाईट गुटस	203	2.96
6	हेवी गुड्ट	136	1.98
7	मिड़ियम गुड़	91	1.32
8	जीब टेक्सी	37	0.54
9	मिनी बसें	46	0.67
10	बसें	21	0.30
11	स्कूल बसें	14	0.20
कुल संख्या		6849	100.00

स्रोत– आई टी ओ विभाग जनपद बागेश्वर 2011

भूमि उपयोग एवं जीवन स्तर

अध्ययन क्षेत्र में भूमि का उपयोग होने से मानव जीवन स्तर में काफी सुधार हो रहा है जिससे भूमि का उपयोग क्षेत्र में अलग रूप में प्रयोग में लाया गया है। शिक्षा के क्षेत्र में गाँवों में प्राथमिक स्तर पर भी सुधार होने लगा है। जिससे निजी प्राथमिक शिक्षा केन्द्र खोले गये हैं एवं शिशु मन्दिर के रूप में छोटे बच्चों को शिक्षा प्रदान किया जा रहा है जिससे ग्रामीणों का जीवन स्तर ऊँचा उठाने एवं शिक्षा में सुधार किया गया है। ग्रामीणों का कठिन जीवन को सरल बनाने के लिए सड़क एवं पंचायत घरों, सूचनाओं की व्यवस्था की गयी है। यहा गाँवों में अनेक प्रकार की योजनाएं चलाई जा रही है। जिसके अन्तर्गत ग्रामीणों को अनेक सुविधाएं प्राप्त किया जा रहा है। जैसे–मछली तालाब की व्यवस्था, मुर्गीपालन, नये मुर्गियों का विकास कर छोटे–छोटे कुटीर उद्योग, चक्की, रासायनिक उर्वरक, पीने का पानी, सिंचाई की सुविधा, नहरों की व्यवस्था, सुखाराहत, पशुपालन, आदि व्यवस्था राज्य सरकार द्वारा अनेक योजनाओं के तहत् उपलब्ध कराया जा रहा है।

ता0 सं0 7 : न्यायपंचायतों में भूमि उपयोग एवं जीवन स्तर (2011)

क0सं0	मद	परिवारों की संख्या
1	विद्युत	11581
2	गैस चूला	11581

3	मोबाईल	10581
4	शौचालय	11581
5	टी0वी0	9890
6	लेण्टर छत मकान	8649
7	स्मार्ट फोन	7871
8	फ्रीज	7608
9	पाख मकान	2932
10	वाशिंग मशीन	3151
11	मोटर साईकिल	184
12	गाड़ी	118
13	मिनी टैक्टर	16

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण के आधार पर जनपद बागेश्वर

निष्कर्ष

क्षेत्र में उपर्युक्त अध्ययन से शोध के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये गये है।

1. अध्ययन क्षेत्र में उपर्युक्त अध्ययन से पाया गया हैं कि शहर से दूर ग्रामीण क्षेत्रों में उत्तर–पूर्व में खड़िया खनन एवं भण्ड़ार अधिकांशतः कृषि क्षेत्रों में ही पाया गया हैं। दुसरी तरफ मानव अधिकांश कृषि योग्य भूमि (सेरों) की तरफ अधिवास बनाने को आकर्षित हो रहा हैं। जिससे आवासीय क्षेत्र बढ़ने से सेरों में कृषि भूमि में कमी आ रही हैं, जिससे ग्रामीण एवं नगरीय दोनों क्षेत्रों में कृषि पर खतरा हो रहा हैं इससे यह स्पष्ट हो जाता हैं कि कृषि क्षेत्र या शुद्ध बोया गया क्षेत्र में आवासीय निर्माण होने से मुख्य रूप से कुछ सेरों में कृषि क्षेत्र आवासीय क्षेत्र में रूपान्तरित हो रहा हैं। यह क्षेत्र भविष्य में 20 से 30 वर्षों में पूर्ण रूप से आवासों में बदल जायेगा। धुर या हिमालयीय क्षत्रों में असुविधा के कारण जीवन स्तर निम्न पाया गया हैं। जिस कारण ये शहरों की तरफ आकृषित हो रहे हैं।
2. जनपद में अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग और व्यवसाय में सम्बन्ध देखने को मिलता है। जिससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता हैं। भूमि उपयोग बढ़ने से व्यवसाय में विकास एवं विस्तार पाया गया हैं।
3. जनपद में सड़कों का विकास उस क्षेत्र की विकास की नीव डालती हैं। क्षेत्र में ग्रामीण क्षेत्रों में सडकों का निर्माण नहीं होने से वर्तमान में भी यह पिछड़ी अवस्था में पायी जाती हैं। इन क्षेत्रों में खाद्य सामग्री पदार्थों के लिए घोड़े या मजदूर की आवश्यकता पड़ती हैं। जिससे यहा शिक्षा स्वास्थ्य की दृष्टि से ग्रामीणों को काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं जिससे यहां के ग्रामीण क्षेत्रों में निम्न स्तर जीवन यापन एवं प्राथमिक कार्यों में मानव श्रम या पशु श्रम उपयोग में लिया जाता हैं, जो अत्यधिक कठिन एवं महंगा होता है। यातायात के साधनों का विकास व विस्तार पर्यटन के विकास इससे जुड़े रोजगारों का विकास करने के लिए आवागमन को सुविधाजनक बनाने के लिए किया गया हैं।
4. जनपद में अधिकांश अधिवासों की संख्या पानी के स्रोतों के आस–पास पाये गये हैं क्योंकि यहां से कृषि की गयी खेतों की देख–रेख के लिए क्षेत्र का चयन किया जाता हैं जिससे भूमि का उपयोग बढ़ जाता हैं। जिस कारण आवासों का क्षेत्रफल का विस्तार पाया गया हैं। बढ़ती जनसंख्या के कारण मानव की आवश्यकता के अनुसार आय के शाधनों में बृद्धि कर अपनी आवश्वकता के साधनों की पूर्ति कर जीवन स्तर में योगदान करता हैं।

सुझाव

1. भूमि उपयोग एवं कृषि भूमि का वैज्ञानिक विधि से उपयोग।
2. सडक निर्माण एवं मानव अधिवास व खनन् कार्य आदि को कृषि क्षेत्र को ध्यान में कर निर्माण कार्य किया जाना चाहिए।
3. जनपद में अधिक से अधिक सड़कों की विकास कर भूमि उपयोग को बढ़ाया जा सकता हैं।
4. जनपद में कृषि क्षेत्र में खड़िया भण्ड़ार एवं कृषि को भविष्य में मध्य नजर रखते हुए खनन् करना।
5. असिंचित क्षेत्रों हेतु सिंचाई के साधनों का विकास।
6. प्राकृति संसाधनों को बनाऐ रखने की वैज्ञानिक विधि का उपयोग।
7. जनपद में प्राकृतिक संसाधनों का संधृत विकास।
8. कृषि से सम्बन्धित रोजगार की उपलब्धता।
9. कृषिगत शिक्षा एवं परम्परागत शिक्षा प्रणाली में सुधार।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *डॉ0 सतपाल सिंह (2012) : अधिवास भूगोल विश्व भारतीय प्रब्लिकेशन 4378/4 अंसारी रोड़ दरियागंज नई दिल्ली –110002। पे0न0– 121*
2. *डॉ0 खर्कवाल एस.सी. (2017) : उत्तराखण्ड, बिनसर पब्लिसिंग हाउस देहरादून,*
3. *डॉ. प्रसाद गायत्री, प्रो. डी. डी. मैठाणी, डॉ. नौटियाल राजेश, (2015) : उत्तराखण्ड का भूगोल, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स 11, युनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद– 211002,।*
4. *डॉ0 बलराम, (2007) ग्रामीण विकास नियोजन, प्रकाशक–आकाश पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स ई 10/663 उत्तराचल कालोनी (निकट संगम सिनेमा) लोनी बोडर गाजियाबाद (उ0 प्र0) 201102; 0120–2603892,।*
5. *वजरंगलाल जेठू (2010) खनिज सम्पदा और पर्यावरण, प्रकाशक–राष्ट्रीय प्रकाश पालीवाल स्ट्रीट चौड़ा रास्ता जयपुर ।*
6. *साह,गोबिन्द लाल, (1982) : तहसील बागेश्वर सूक्ष्म स्तरीय प्रादेशिक अध्ययन (शोध–प्रबन्ध)।*
7. *कुमार विनोद, (2013) : अकबरपुर विकास खण्ड (जनपद अम्बेडकर चांदना नगर) की परिवर्तित भूमि उपयोग का एक भौगोलिक अध्ययन ,*
8. *चतुरभुज, सिसौदिया (2010–11) आर्थिक भूगोल, एस0बी0पी0डी0 पब्लिकेसन – आगरा मथुरा बाईपास रोड,*